1/1

भीम

कक्षा: सात

विषय : हिंदी

बाल महाभारत कथा

प्रस्तुतकर्ता :
शिवदत्त शर्मा
टी.जी.टी. (एस.एस)
हिंदी/ संस्कृत
प. ऊ. कें. वि.- 2, तारापुर

पाठ का सार

हस्तिनापुर में पाँचों पांडव तथा कौरव खेलते एवं मजाक करते हुए साथ-साथ रहने लगे । जोश से परिपूर्ण भीम खेल में दुर्योधन व उसके भाइयों को बहुत परेशान करता था। जिससे कौरव भीम से द्वेष करने लगे | कृपाचार्य कौरवों व पांडवों को अस्त्र -शस्त्र की विद्या सिखाने लगे जिसमें पांडव आगे रहते थे । इस कारण कौरवों का द्वेष और बढ़ने लगा। कौरवों ने भीम को मारकर शेष पांडवों को बंदी बनाकर संपूर्ण राज्य पर अधिकार करने की योजना बनाई।

एक दिन दुर्योधन ने जल क्रीड़ा की योजना बनाई । इस क्रीडा के लिए पांडवों को भी न्यौता दिया। खूब खेलने व तैरने के बाद सभी ने डटकर भोजन किया और अपने डेरों में जाकर सो गए । दुर्योधन ने भीम के भोजन में चुपके से विष मिला दिया था। वह नशे में चूर होकर गंगा किनारे ही गिर गया था । दुर्योधन ने लताओं से बांधकर भीम को गंगा में बहा दिया । दुर्योधन बहुत खुश था जबकि युधिष्ठिर आदि भीम को न देखकर बहुत चिंतित हुए । उन्होंने भीम को जंगल तथा गंगा तट पर खोजा तथा न मिलने पर निराश होकर लौट आए । इसी समय भीम झूमता हुआ आ गया । कुंती बहुत प्रसन्न हुई।

इस विषय पर कुंती ने विदुर को बुलाकर चिंता प्रकट की। विदुर ने कुंती को समझाते हुए कहा कि इस बात को अपने तक ही सीमित रखो । दुर्योधन की निंदा कदापि मत करना नहीं तो उसका द्वेष और बढ़ेगा। भीम को शांत करते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि हमें एक दूसरे की रक्षा करते हुए सुरक्षित रहना है। भीम के वापस आने पर दुर्योधन को बड़ा आश्चर्य हुआ।

भावबोधात्मक प्रश्न

1. पांडव और कौरव हस्तिनापुर में कैसे रहते थे ?

2. पांडवों ने भीम को कहाँ - कहाँ खोजा ?

3. दुर्योधन भीम से ईर्ष्या - द्वेष क्यों करता था ?

गृहकार्य

1. पांडवों और कौरवों में विद्या सीखने में कौन आगे रहते थे ?

2. दुर्योधन ने भीम को मारने की क्या योजना बनाई ?

3. कुंती की चिंता सुनकर विदुर ने उन्हें क्या सलाह दी ?

4. धृतराष्ट्र के कितने पुत्र थे और वह क्या कहलाते थे?

कर्ण

पाण्डवों और कौरवों ने कृपाचार्य व गुरु द्रोणाचार्य से अस्त्र -शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की । विद्या प्राप्ति के बाद राजकुमारों के रण कौशल के प्रदर्शन के लिए एक समारोह आयोजित किया गया। जिसमें अर्जुन ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। यह देखकर दर्शक बहुत प्रसन्न हुए किंतु दुर्योधन के मन में बहुत ईर्ष्या हुई। इसी समय अधिरथ द्वारा पोषित कुंती पुत्र कर्ण रंगभूमि में आया और अर्जुन को चुनौती देकर कहा कि मैं तुमसे अधिक कौशल दिखा सकता हूँ | क्या तुम इसके लिए तैयार हो ? दुर्योधन को यह सुनकर बहुत खुशी मिली। उसने कर्ण से कहा - "बताओ, हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं।" कर्ण ने उत्तर दिया कि मै आपसे मित्रता और अर्जुन से द्वंद्व युद्ध करना चाहता हूँ।

इस प्रकार करण द्वारा अर्जुन को द्वंद्व युद्ध के लिए चुनौती देने पर कृपाचार्य ने कर्ण से कहा कि अज्ञात वीर तुम अपना परिचय दो क्योंकि राजकुमार बगैर परिचय पाए द्वंद्व युद्ध नहीं करते। द्वंद्व युद्ध बराबर वालों में होता है। तुम किस राजकुल से हो। यह सुनकर कर्ण ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब दुर्योधन ने कहा कि बराबरी की बात है तो मैं कर्ण को अंग देश का राजा बनाता हूँ। रंगभूमि में ही कर्ण का राज्याभिषेक कर अंग देश का राजा घोषित कर दिया।

अधिरथ अपने पुत्र को खोजते हुए रंगभूमि में आया । कर्ण ने पिता के सम्मान में सिर झुकाया । अधिरथ ने भी पुत्र को गले लगा लिया । भीम ने उपहास में कर्ण को सूत पुत्र कह कर अपमानित किया । इसी समय सूर्य अस्त हो गए और सभा विसर्जित हो गई । अपने पुत्र अर्जुन की भावी युद्ध में रक्षा हेतु इंद्र ने वेश बदलकर भिक्षा में कर्ण से कवच - कुंडल माँग लिए । इंद्र ने कर्ण की दानवीरता से प्रसन्न होकर अपनी अमोघ शक्ति कर्ण को वरदान में दे दी किंतु शर्त भी रख दी कि एक बार ही इसका प्रयोग कर सकोगे । कर्ण ने ब्राह्मण का वेश धारण करके छल से परशुराम से अस्त्र - शस्त्र तथा ब्रह्मास्त्र चलाना सीख लिया । जब परशुराम कर्ण की जाँघ पर सिर रखकर सो रहे थे तभी काले भौंरे ने कर्ण की जाँघ को लहूलुहान कर दिया ।

जब परशुराम जगे तो उन्होंने जाँघ से बहते खून को देखकर पूछा कि सच बताओ , तुम कौन हो ? तब   कर्ण ने सच बताया कि मैं ब्राह्मण नहीं सूत पुत्र हूँ। तब परशुराम ने शाप दिया कि "जो विद्या तुमने मुझसे सीखी है वह अंत समय में तुम्हारे किसी काम न आएगी। ऐन वक्त पर तुम उसे भूल जाओगे और रणक्षेत्र में तुम्हारे रथ का पहिया पृथ्वी में धँस जाएगा।" कुरुक्षेत्र के युद्ध में यही हुआ जब कर्ण रथ का पहिया निकाल रहा था तभी अर्जुन ने प्रहार करके कर्ण का वध कर   दिया।

भावबोधात्मक प्रश्न

1. अर्जुन को रंगभूमि में कर्ण ने क्या चुनौती दी ?

2. इंद्र ने कर्ण से भिक्षा में क्या माँगा और क्यों ?

3. कर्ण की मृत्यु किस प्रकार हुई ?

गृहकार्य

1. कौरव और पांडवों ने अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा किस- किससे प्राप्त की?

2. कृपाचार्य ने कर्ण से क्या कहा ?

3. इंद्र ने कर्ण से वरदान में क्या माँगा ?

4. परशुराम ने कर्ण को क्या शाप दिया ?

द्रोणाचार्य

आचार्य द्रोण महर्षि भरद्वाज के पुत्र थे। द्रोण और पांचाल नरेश के पुत्र द्रुपद ने साथ - साथ भरद्वाज के आश्रम में शिक्षा पायी। दोनों परम मित्र थे। द्रुपद ने मित्रता में यहां तक कह दिया था कि राजा बनने पर आधा राज्य तुम्हें दे दूँगा। कृपी के साथ द्रोण का विवाह हुआ और उनके अश्वत्थामा नाम का पुत्र हुआ। बाद में द्रोण ने परशुराम से धनुर्विद्या की पूर्ण शिक्षा ग्रहण की ।

द्रुपद के राजा बनने के बाद द्रोण बड़ी प्रसन्नता व आशा से पांचाल देश द्रुपद से मिलने गए। तथा कहा "मित्र द्रुपद मुझे पहचानते हो न ? मैं तुम्हारा बालपन का मित्र द्रोण हूँ।" ऐश्वर्य के मद में द्रुपद ने कहा कि दरिद्र की धनी के साथ, मूर्ख की विद्वान के साथ और कायर की वीर के साथ मित्रता कैसे हो सकती है ? मित्रता बराबरी की हैसियत वालों में ही होती है। यह सुनकर द्रोणाचार्य बहुत लज्जित हुए तथा द्रुपद को सबक सिखाने का निश्चय किया।

एक दिन हस्तिनापुर के राजकुमार नगर के बाहर गेंद खेल रहे थे। खेलते - खेलते उनकी गेंद कुएँ में गिर गई। तभी वहाँ द्रोणाचार्य आए और अद्भुत चमत्कारिक तरीके से गेंद के साथ- साथ युधिष्ठिर की अंगूठी भी कुएँ से निकाल दी। इस घटना के बाद पितामह भीष्म ने द्रोण का बहुत सत्कार किया तथा राजकुमारों को धनुर्विद्या सिखाने का उत्तरदायित्व द्रोण को दे दिया। राजकुमारों की शिक्षा पूरी होने के बाद गुरु दक्षिणा के रूप में उनसे द्रुपद को कैद कर लाने को कहा। दूसरे राजकुमारों के असफल रहने पर द्रोण ने अर्जुन को भेजा। अर्जुन ने मंत्री सहित द्रुपद को कैद करके अपने गुरु द्रोण के सामने खड़ा कर दिया । द्रोणाचार्य ने द्रुपद को अभय दान देते हुए आधा राज्य द्रुपद को वापस दे दिया।

आचार्य द्रोण से अपमानित होने के बाद उनसे बदला लेने की भावना द्रुपद के जीवन का लक्ष्य बन गई। उन्होंने कठोर व्रत और तप इस कामना हेतु किया कि उसे एक ऐसा पुत्र पैदा हो जो द्रोण को मार सके तथा एक ऐसी कन्या हो जो अर्जुन को ब्याही जा सके। उनकी इच्छा पूरी हुई | उनके धृष्टद्युम्न नामक पुत्र एवं द्रोपदी नामक पुत्री हुई। महाभारत के युद्ध में धृष्टद्युम्न ने अजेय द्रोणाचार्य का वध किया।

आचार्य द्रोण से अपमानित होने के बाद उनसे बदला लेने की भावना द्रुपद के जीवन का लक्ष्य बन गई। उन्होंने कठोर व्रत और तप इस कामना हेतु किया कि उसे एक ऐसा पुत्र पैदा हो जो द्रोण को मार सके तथा एक ऐसी कन्या हो जो अर्जुन की ब्याही जा सके। उनकी इच्छा पूरी हुई | उनके धृष्टद्युम्न नामक पुत्र एवं द्रोपदी नामक पुत्री हुई। महाभारत के युद्ध में धृष्टद्युम्न ने अजेय द्रोणाचार्य का वध किया।

भाव बोधात्मक

1. आचार्य द्रोण किसके पुत्र थे ?

2. द्रुपद ने द्रोण से भरद्वाज आश्रम में क्या कहा था ?

3. द्रुपद को कैद करके द्रोण के सामने कौन लाया ?

गृहकार्य

1. धन प्राप्ति की इच्छा रखने वाले द्रोण से परशुराम ने क्या कहा ?

2 राजकुमारों की गेंद को कुएँ से द्रोण ने किस प्रकार निकाला ?

3. द्रोण जब द्रुपद के पास गए तो द्रुपद ने उनसे क्या कहा ?

4 . द्रुपद की पुत्री का नाम क्या था ?